बाल गंगाधर तिलक की राजनीतिक विचारधाराएँ

डॉ0 हितेन्द्र यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
लाजपत राय कॉलेज,
साहिबाबाद, गाजियाबाद
ईमेलः dr.hitendra2011@gmail.com

सारांश

राष्ट्रवाद के जनक और लोकमान्य के नाम से प्रसिद्ध तथा भारतवासियों को स्वराज्य के अधिकार का प्रथम पाठ पढ़ाने वाले बाल गंगाधर तिलक आधुनिक भारत के महानतम् कर्मयोगियों में से हैं। बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में चिखली गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम गंगाधर पंत था जो अध्यापक थे और संस्कृत के विद्वान थे। तिलक का विराट व्यक्तित्व उनके कार्यों तथा प्रयासों का स्पष्ट प्रमाण हैं। उनका सार्वजनिक जीवन 1880 में एक शिक्षक और शिक्षक संस्था में संस्थापक के रूप में आरम्भ हुआ इसके बाद 'मराठा' और 'केसरी' उनकी आवाज बन गये। उन्होंने मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी भाषा में 'मराठा' के माध्यम से लोगों की राजनैतिक चेतना को जगाने का कार्य किया। सामाजिक सुधारों के साथ–साथ उन्होंने लोगों का ध्यान राजनैतिक समस्या ब्रिटिश शासन से भारत की मुक्ति की ओर दिलाया। अखबार में लिखे उनके लेख आजादी के दीवानों में एक नई ऊर्जा का संचार करते थे इसके लिए अंग्रेजों ने उन्हें कई बार जेल भेजा।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 18.01.2025
Approved: 16.03.2025

हितेन्द्र यादव

बाल गंगाधर तिलक की राजनीतिक विचारधाराएँ

RJPP Oct.24-Mar.25, Vol. XXIII, No. I, Article No. 09 Pg. 76-80

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no1

बाल गंगाधर तिलक को 'लोकमान्य' की उपाधि उनके अनुयायियों ने दी थी। उन्हें यह उपाधि होमरूल आन्दोलन 1916 के दौरान दी गई जिसका अर्थ होता है लोगों द्वारा प्रतिष्ठित। वे भारत की उस पीढ़ी के व्यक्ति थे जिस पीढ़ी ने आधुनिक कॉलेज की शिक्षा पायी। वे अंग्रेजी शिक्षा के कड़े आलोचक थे उनका मानना था कि यह शिक्षा भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है। उन्होंने 'दक्कन शिक्षा सोसाइटी' की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधर सके। तिलक का विचार था कि भारतीय जनता को पूर्ण रूप से पाश्चात्य सभ्यता की प्रतिमूर्ति न बनकर अपने गौरवमयी अतीत के प्रति ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

तिलक ने बहुत पहले ही राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझ लिया था। उन्होंने 'गणेश उत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' को व्यापक रूप से मनाना प्रारम्भ किया। उनका मानना था कि इस तरह के सार्वजनिक मेल मिलाप के कार्यक्रम लोगों में सामूहिकता की भावना का विकास करते हैं। वह अपने इस उद्देश्य में काफी हद तक सफल भी हुए।

तिलक ने भारतीय दर्शन और संस्कृति पर अनेक रचनाऐं की। माण्डले जेल में उन्होंने 'गीता रहस्य' नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होनें ''श्रीमद्भगवत गीता'' के कर्मयोग की वृहद व्याख्या की। इसके अलावा आर्कटिक होम इन द वेदाज, 'द हिन्दु फिलोसफी ऑफ लाइफ', 'इथिक्स एण्ड रिलीजन', 'वैदिक क्रोनोलॉजी एण्ड वेदांग ज्योतिष' आदि पुस्तके भी उन्होंने लिखी।

इण्डियन होम रूल लीग का गठन तिलक के राजनैतिक जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी तिलक अपनी पीढ़ी के उन नेताओं में सबसे बड़े थे, जिन्होंने गाँधीवादी युग के परीक्षणों और विजयों के लिए राष्ट्र को तैयार किया। साहस और संघर्ष की मूर्ति तिलक के विषय में गुरूमुख निहाल सिंह ने कहा है– ''यदि तिलक नहीं होते तो भारत अब भी पेट के बल सरक रहा होता, सिर धूल में दबा होता और उसके हाथ में याचिका होती। तिलक ने भारत की रीढ़ की हड्डी को बलिष्ठ बनाया और इसे अपना सिर ऊँचा रखते हुए पैरों के बल खड़ा रहना सिखाया।''

तिलक सच्चे अर्थों में उग्र राष्ट्रवाद के जनक थे। तिलक का राजनैतिक दर्शन आध्यात्मिक अवधारणाओं पर आधारित था। उनके राजनैतिक दर्शन में भारतीय दर्शन की कुछ प्रमुख धारणाओं तथा आधुनिक यूरोप के राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक विचारों का समन्वय देखने को मिलता है। वे वेदान्तवादी थे और उन्होनें वेदांत के अद्वैतवादी सिद्धान्त के आधार पर ही प्राकृतिक अधिकारों की राजनैतिक धारणा का निर्माण किया तिलक का चिन्तन अध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित था। उन्होंने स्वराज्य को केवल एक अधिकार ही नहीं वरन् धर्म भी माना।

तिलक का राष्ट्रवाद

तिलक ने भारतीयों में यह भावना भरने का अथक प्रयास किया कि वे वेदों और गीता के महान सन्देशों से नई शक्ति और नई स्फूर्ति ग्रहण करके ही ब्रिटिश नौकरशाही से लोहा लेकर स्वराज्य की स्थापना सम्भव कर सकते है। सुधारों के नाम पर प्राचीन संस्कृति एवं गौरव का अनादर राष्ट्रीयता के पतन का प्रतीक हैं भारत में सच्ची राष्ट्रीयता उत्पन्न करने के लिए प्राचीन संस्कृति का पुनर्जागरण आवश्यक है।

तिलक ने राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक धारणा माना है। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में आदिम जातियों के मन में अपने कबीले के प्रति जो भक्ति रहती थी

उसी का आधुनिक नाम राष्ट्रवाद है। इस राष्ट्रवाद का सम्बन्ध तीव्र संवेगों और अनुभूतियों से हैं। तिलक ने भारत में एकता की प्रतिस्थापना का मार्ग बताते हुए कहा कि भारत में विद्यमान विभिन्न पन्थ वैदिक धर्म की शाखाएँ प्रशाखायें हैं। जब तक एक मत दूसरे मत से सामंजस्य स्थापित नहीं करता हम हिन्दुओं के रूप में आगे नहीं बढ़ सकते।

हिन्दुओं में एकता की भावना जाग्रत करने के उद्ददेश्य से तिलक ने राष्ट्रवाद के विकास में सार्वजनिक उत्सवों को महत्वपूर्ण माना। राष्ट्रीयता को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप देने के लिए ही उन्होंने 'गणेश उत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' मनाना शुरू किया। 'गणेश उत्सव' द्वारा उन्होंने धार्मिक उत्सव को सामाजिक और राजनीतिक अर्थ दिया तथा 'शिवाजी उत्सव' द्वारा उन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं को उभारने और संगठित करने का काम किया उनके अनुसार उत्सव प्रतीक का काम करते हैं जिनसे राष्ट्रवाद की भावना पनपती है। राष्ट्रीय उत्सव, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज आदि देशवासियों के संवेगों और भावों में तीव्रता लाते हैं तथा उनमें राष्ट्रवादी भावना को तीव्रता से जाग्रत करते है। तिलक ने प्राचीन उत्सवों को किस प्रकार आधुनिक राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल बना दिया यह निस्संदेह उनकी राजनैतिक और नेतृत्व प्रतिभा का सुन्दर उदाहरण है।

तिलक ने राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में आर्थिक पक्ष को भी पर्याप्त महत्व दिया। 'केसरी' में अपने लेखों द्वारा तिलक ने स्पष्ट कहा कि भारत का कच्चा माल विदेशों से पक्का बनकर जब लौटता है तो भारती की इस प्रकार लूट की जाती है। भारत में जो स्वदेशी आन्दोलन चला वह आर्थिक दृष्टि से देश के प्रारम्भिक पूँजीवाद की वृद्धि का ही आन्दोलन था।

स्वराज्य

राजनैतिक क्षेत्र में तिलक की सबसे बड़ी देन 'स्वराज्य' का विचार था। उन्होंने सम्पूर्ण भारत को यह मंत्र प्रदान किया कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। इससे उनका जो अभिप्राय था उसे उन्होंने अपने एक भाषण में स्पष्ट करते हुए कहा था कि ''स्वराज्य का अर्थ है सारा नियन्त्रण अपने हाथों में लेना। मैं अपने घर की कुंजी अपने हाथ में रखना चाहता हूँ हमारा लक्ष्य स्वराज्य है। हम प्रशासन करने वाले समूचे शासन–तंत्र पर अधिकार चाहते है। हम केवल क्लर्क नहीं बनना चाहते. ... इस समय हम क्लर्क हैं और एक विदेशी सरकार के हाथों में अपने ही उत्पीड़न का साधन बने हुए है।'' स्वराज्य से वे इस स्थिति का प्रतिकार करना चाहते थे।

तिलक के स्वराज्य व होमरूल की अवधारणा कुछ अंशों में आयरलैंड के स्वतन्त्रता आन्दोलन पर आधारित थी। आयरिश आन्दोलन से प्रभावित होते हुए भी तिलक का स्वराज्य का विचार गीता के स्वधर्म के विचार पर आधारित था। यदि कोई व्यक्ति स्वराज्य के लिए प्रयास नहीं करता तो वह अपने धर्म का पालन नहीं करता। संक्षेप में स्वराज्य का आशय केवल इतना ही है कि भारत में शासन की समूची व्यवस्था भारतीयों द्वारा भारत के हितों का ध्यान रखते हुए की जानी चाहिये। भारत को यह स्वराज्य अपने ही प्रयत्नों से प्राप्त हो सकता है अतः इसके लिए उग्र संघर्ष करना चाहिये।

स्वराज्य प्राप्ति के लिए अहिंसक किन्तु उग्र साधनों का समर्थन

तिलक ने उन उपायों का भी उल्लेख किया जिनके द्वारा स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है। उन्होनें कहा कि भारतीयों को स्वराज्य का अधिकार उग्र प्रयत्नों और क्रियात्मक उपायों से प्राप्त

होगा। तिलक स्वराज्य प्राप्ति हेतु उदारवादियों द्वारा अपनाये गये साधनों से सहमत नहीं थे। तिलक इस दृष्टि से दवाब की राजनीति में विश्वास करते थे और यह मानते थे कि जब तक देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत और देश सेवा के लिए समर्पित भारतीय जनमानस द्वारा जनशक्ति पर आधारित स्वदेशी, बहिष्कार और अहिंसक लेकिन उग्र निष्क्रिय प्रतिरोध के आन्दोलनात्मक साधनों को नहीं अपनाया जाता तब तक साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासको को भारत को स्वराज्य प्रदान करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। अतः तिलक ने भारतीय जनता को स्वदेशी और बहिष्कार रूपी निष्क्रय प्रतिरोध में उग्र किन्तु अहिंसक साधनों को स्वराज्य प्राप्ति हेतु अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि ये तरीके तभी सफल हो सकते हैं जबकि देश प्रेम और देश सेवा की भावना में प्रशिक्षित जनता द्वारा व्यापक पैमाने पर इसका प्रयोग किया जाये। इसके लिए ही उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा योजना प्रस्तुत की और इसे व्यवहारिक रूप प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षण योजनाओं की स्वयं भी स्थापना की। वे यह भली–भाँति जानते थे कि जब तक भारतीय जनता को राष्ट्रीय भावनाओं में प्रशिक्षित नहीं किया जायेगा तब तक स्वदेशी, बहिष्कार का व्यापक पैमाने पर प्रयोग सम्भव नहीं है। तत्कालीन शिक्षा पद्वति को दोषपूर्ण मानते हुए उन्होंने बारसी नामक स्थान पर अपने भाषण में कहा था कि– ''20 वर्ष तक इसमें सड़ने के बाद भी विद्यार्थी को अपने धर्म और कर्तव्यों का कोई बोध नहीं होता है।'' उनका मानना था कि गुरू शिष्यों में देश के पुनरूत्थान और जागृति की ऐसी भावना कूट–कूटकर भरें कि वे देश के स्वतन्त्रता संग्राम में पूरी तरह जुट जाये।

उग्रवादी विचारधारा

कांग्रेस और देश को उग्रवाद के पथ पर ले जाने वाले पहले बड़े नेता श्री लोकमान्य तिलक थे। तिलक ने जिस समय कांग्रेस में प्रवेश किया वह उदारपंथी बुद्धिजीवियों की एक संस्था थी जो प्रार्थना पत्रों, स्मरणपत्रों और प्रतिनिधि मंडल आदि द्वारा ब्रिटिश शासको से स्वशासन की मांग करने में विश्वास रखती थी उनका ब्रिटिश शासकों की सदाशयता और न्यायप्रियता में गहरा विश्वास था उनकी मान्यता थी कि एक बार सन्तुष्ट कर दिये जाने पर थाली में रखकर वे सहज ही भारत को स्वशासन प्रदान कर देंगे। लेकिन तिलक ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों के हर प्रकार से शोषण करने के इरादों को समझ लिया था इसलिए उन्होंने कांग्रेस की उदारवादी बुद्धिजीवियों की संस्था से जाग्रत जनशक्ति आधारित उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलनात्मक संगठन का रूप देने का प्रयास किया। इस प्रकार तिलक ने अपने प्रेरणा स्पद नेतृत्व, अद्भुत संगठन क्षमता एवं अदम्य संघर्षशीलता के बल पर कांग्रेस का कायाकल्प कर दिया तथा उसे भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का एक प्रमुख एवं अग्रणी संगठन बना दिया।

लार्ड कर्जन द्वारा बंग भंग की घोषणा करने और कलकत्ता विश्वविद्यालय पर नये कानून द्वारा प्रतिबन्ध लगाने की आलोचना करते हुए तिलक ने केसरी में अनेक लेख लिखे और जब बंगाल में विभाजन के विरूद्ध आन्दोलन शुरू हुआ तो उन्होंने बंगाल के नेताओं का पूर्ण समर्थन करते हुए इसे समस्त भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन बना दिया।

अहिंसक क्रांतिवादी

तिलक न तो अपने कृतित्व की दृष्टि से हिंसक गतिविधियों में विश्वास रखने वाले थे और न ही वे क्रांतिकारियों की जो परिभाषा की जाती है उसमें फिट बैठते थे। तिलक का विश्वास संवैध

ाानिक साधनों के उग्र और सक्रिय प्रयोग तक सीमित था। वे हिंसा के विरोधी थे लेकिन अंहिसा के पुजारी नहीं थे। व्यवहारिक दृष्टि से वे हिंसक साधनों की उपयोगिता और प्रभाव पूर्णता में विश्वास नहीं करते थे। तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें उग्र किन्तु अहिंसक संवैधानिक साधनों का प्रयोग ही स्वराज्य प्राप्ति हेतु उचित लगा। इसी आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े हिलाने के लिए स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से जन–जागरण उत्पन्न करने का आहवान किया। अतः तिलक हिंसक नहीं एक अहिंसक क्रांतिकारी थे तथा उनकी क्रांति के साधन उग्र राष्ट्रवाद पर आधारित थे जिसका प्रयोग वे देशाभिमान और आत्म सम्मान की भावना के साथ करना चाहते थे। उन्होंने निरन्तर तर्क दिया कि ''मैं राष्ट्रवादी हूँ और अपने देश से प्रेम करता हूँ किन्तु मैं ऐसी किसी योजना से परिचित नहीं हूँ जिसका उद्देश्य वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था को हिंसात्मक तरीके से उलट देना हो।'' वे लोक नायक थे, लोकमान्य थे जो सदैव जनता को लेकर चलना चाहते थे। उनका नेतृत्व जनतांत्रिक था। उन्होंने न केवल शिक्षित वर्ग का बल्कि किसानों, मजदूरों, व्यापारियों और ग्रामीणों का भी नेतृत्व किया। उनकी प्रबल आस्था जनशक्ति में थी। उनके वचन हजारों लोगों के लिए वेदवाक्य थे। सही अर्थों में तिलक भारतीय राष्ट्रवाद के जनक है।

सन्दर्भ

1. रामगोपाल. भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास।
2. शर्मा, गोकुल चन्द्र. तपस्वी तिलक।
3. शर्मा, नन्द कुमार देव. लोकमान्य तिलक की जीवनी।
4. सिंह, प्रताप. आधुनिक भारत।
5. रमैया, पट्टाभिसीता. ''द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन नेशनल कांग्रेस खण्ड।''
6. जोग, एन.जी. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।
7. वर्मा, डॉ0 वी. पी. द लाइफ एण्ड फिलोसफि ऑफ लोकमान्य तिलक।